कड़ी 7 जैव विविधता और स्वास्थ्य

(सिग्नेचर ट्यून)

(सिगनेचर ट्यून– फेड्स आउट)

(शीर्षक गीत)

(शीर्षक गीत फेड्स आउट)

सूत्रधार– दोस्तो लो मैं फिर हो गया हाजिर लेकर एक नई कड़ी। पिछली कड़ी में आपने जाना....

(पिछली कड़ी का संक्षिप्त परिचय)

और अब हाजिर है रिश्ता हमारा जैव–विविधता से, रिश्ता जिंदगी का, रिश्ता हमारे स्वास्थ्य का जैव–विविधता से यानी कि 'जैव–विविधता और स्वास्थ्य'

(संगीत)

पुरूष स्वर– हरी–भरी धरती, लहलहाती फसलें; सुन्दर, रंग–बिरंगे फूल, पतिंगे, तितलियां..... कितनी खूबसूरत है, अपनी ये धरती। धरती जिसे हम ये समझते हैं (फुसफुसाकर) अपनी बेवकूफी में, (सामान्य स्वर) कि ये सिर्फ हमारे लिये है। जानते हैं आप इस पृथ्वी नामक गृह पर हमारी औकात है कितनी? एक अनुमान के हिसाब से इस पृथ्वी पर करीब 100 करोड़ किस्म के जीवधारी और पेड़ पौधे पाये जाते हैं। ये संख्या और भी ज्यादा हो सकती है, क्योंकि अभी भी बहुत सी जगहें ऐसी हैं जहां इंसानों के कदम नहीं पहुॅचे हैं। हो सकता है वहां भी कुछ अन्य प्रकार के जीवधारी, वायरस या बैक्टीरिया पाये जाते हें। मतलब ये कि इस धरती पर हमारा अधिकार सिर्फ इसके सौ करोड़वें हिस्से पर है। पर हमें तो पूरे का पूरा ग्रह चाहिये। यही क्यों हमें तो चांद चाहिये, मंगल चाहिए पूरी की पूरी सृष्टि चाहिये। हमारे यही प्रयास, हमारी यही इच्छायें; हमारी पृथ्वी का, हमारी प्रकृति का, लगातार नुकसान करती आ रही हैं।

(जंगल या बाग का आभास देते ध्वनि प्रभाव, हवा चलने का स्वर, पक्षियों का कलरव)

स्त्री स्वर– दोस्तो मैं दिल्ली के पास के जंगल में खड़ी हूॅ। बड़ा अच्छा और शांत माहौल है। शाम होने वाली है। मैं हूॅ, घोसलों को वापस जाते पक्षी हैं। पर यही मेरी भूल है शायद। हर क्षण यहां जीवन धड़कता है। एक अनुमान के अनुसार एक वर्ग गज जमीन में करीब 50,000 केंचुये और उनके परिजन, करीब इतने ही कीड़े, मकोड़े चीटियां और करीब एक करोड़ सूंड़ियां तक हो सकती हैं। अगर मैं यहॉ की एक मुट्ठी मिट्टी उठाऊं तो जानते हैं उसमे कितने जीवित प्राणी होंगें? करीब तीस हजार के आस पास एक कोशकीय प्राणी, 50,000 एल्गी, चार लाख फफूंद के स्पोर या पौधे और अरबों जीवाणु। यही है जैव–विविधता। हमने कभी ध्यान दिया उन पर, कभी उनकी मौजूदगी का अहसास किया? नहीं, जबकि उन्हें हमारी जरूरत नहीं, हमें उनकी जरूरत है। हमारी रोजमर्रा की जिंदगी तो इससे जुड़ी ही है पर इससे सबसे जयादा प्रभावित होता है स्वास्थ्य, हमारा और हमारी आने वाली नस्लों तक का।

पुरूष स्वर– जब हम स्वास्थ्य की बात करते हैं तो स्वास्थ्य के मूल मंत्र की बात करें, सबसे पहले। यानि कि खाना–पीना, रहना और सांस लेना.....भोजन, पानी, हवा और वातावरण।

स्त्री स्वर– एक जमाना था, खेतों में तरह तरह की फसलें उगती थीं। हर तरह के अनाज, मक्का, बाजरा, चना, जौ, अरहर, अलसी, राई, ढेंचा, सनई, रमास, मोंठ, न जाने कितने अनाज, कितनी दालें। हाल में ही लोगों ने फर्क करना शुरू किया फसलों से फसलों में।

एक किसान से साक्षात्कार (May be produced in studio setting)

(हल चलने का ध्वनि प्रभाव)

सम्भावित प्रश्न

* कितनी जमीन है?
* क्या क्या उगाते हैं?
* आपके पिता और दादा के जमाने में कौन कौन सी फसलें होती थी?
* अब कुछ फसलों का उगाना क्यों बन्द कर दिया?
* क्या सोचते हैं इससे इन्सानियत का भला हो रहा है?

सम्भावित उत्तर–

* बाप दादों के जमाने में कई फसलें उगती थीं। उनमें से बहुत सारी अब हम नहीं उगाते। कौन पसन्द करता है अब लोबिया दरहरी, बाजरा और ज्वार। जब मांग नहीं, तो बिक्री नहीं। अच्छे दाम नहीं तो क्यों उगायें?
* गेंहू मूंगफली, सूरजमुखी, आलू, सरसों पर वैज्ञानिक भी ध्यान दे रहें हैं। उनकी नई किस्में आसानी से मिल जाती हैं। उनके बारे में जानकारी भी आसानी से उपलब्ध है।
* हालात निराशाजनक है। हमारी आगे आने वाली पीढ़ियों को शायद कुछ फसलों के बारे में कुछ भी पता नहीं होगा क्योंकि तब तक धरती से वे फसलें विलुप्त हो चुकी होंगी।
* सबको मिलकर उपाय करना चाहिये ताकि हम इन्हें विलुप्त होने से बचा सकें।

पुरूष स्वर– धरती पुत्र किसान से बात करके मुझ पर तो मिली जुली प्रतिकिया हुई। एक ओर लगा कि शायद खेती की नई पद्धति ने भोजन की पैदावार बढ़ाई है, किसान को सुखी और पैसे वाला बनाया है। पर दूसरी ओर निराशा भी है, पुरानी फसलों के मिटते जाने की तकलीफ भी है। ये जो फायदे दिख रहे हैं वे कोई छलावा तो नहीं?

कृषि विज्ञानी से साक्षात्कार–1

सम्भावित प्रश्न–

* आज के बदलते परिवेश में मानव के लिये भोजन की उपलब्धता?
* बायोडायबर्सिटी पर इसका प्रभाव?
* क्या ये परिवर्तन स्थाई रूप से भोजन की समस्या का समाधान कर सकते हैं?

सम्भावित उत्तर–

* अब तक सात हजार किस्म के पौधों को भोजन के लिये उगाया जा चुका है।
* सत्तर हजार किस्म के पौधों में कोइ न कोई खाने योग्य भाग होता है।
* 50 किस्म के पौधें बड़े पैमाने पर खेती के लिये उगाये जाते हैं।
* 82 प्रकार के पौधों से मानव भोजन की 90 प्रतिशत आवश्यकता की पूर्ति होती है।
* खाद्य उत्पादन खतरे में है। कितने प्रतिशत लोगों को भरपेट भोजन उपलब्ध नहीं होता। (आकंड़े दें)
* भोजन के लिये उगाई जाने वाली कुछ किस्में विलुप्त होती जा रही है।
* 'मोनो–कल्चर एग्रीकल्चर' का चलन बढ़ रहा है

स्त्री स्वर– एक स्थान पर एक ही तरह की फसल की खेती करना, जिसे अभी हमारे विशेषज्ञ ने मोनो–कल्चर एग्रीकल्चर कहा, एक ललचाने वाला विचार है। मगर ये खाद्य समस्या का समाधान नहीं बन सकता।

कृषि विज्ञानी से साक्षात्कार–2

संभावित प्रश्न–

* 'मोनो–कल्चर फार्मिंग' क्या है?

* इसके फायदे नुकसान क्या हैं?

सम्भावित उत्तर–

* 'मोनो–कल्चर एग्रीकल्चर' की परिभाषा सरल सहज भाषा में जिसे लक्ष्य वर्ग आसानी से समझ सके।
* इसके लाभ– अधिक उपज, साफ–शुद्ध अन्न अधिक कमाई।
* इसके नुकसान–ज्यादा पानी चाहिये, ज्यादा खाद चाहिये, कीटनाशकों का प्रयोग अधिक।
* इसके मानव–स्वास्थ्य के लिये खतरे बतायें।
* च्मेजपबपकम तमेजेजंदबमए फलतः फसलों का नुकसान अधिक।
* नई नई प्रजातियों को 5 से 9 वर्ष के अन्तराल पर विकसित करने की आवश्यकता।
* सेन्ट्रल अमेरिका के परम्परागत व आधुनिक काफी फार्मिंग का उदाहरण दें या उसी के समकक्ष भारतीय उद्धरण दिये जा सकते हैं।

पुरूष स्वर– सब जानते हैं कि पौधें भोजन का अकेला जरिया नहीं हैं। मांस भी भोजन का एक अहम हिस्सा है। पर इस मांसाहार ने हमारी जैव विविधता का जितना नुकसान किया है, उतना किसी और ने नहीं किया।

विशेषज्ञ–से साक्षात्कार

संभावित प्रश्न–

* विश्व के अनुमानतः कितने प्रतिशत व्यक्ति मांसाहारी हैं?
* कितनी जन्तु प्रजाजियां मांसाहार के लिये प्रयोग की जाती हैं?
* मांसाहार के कारण कितनी जन्तु प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं।

संभावित उत्तर–

अ अधिकांश लोग पूर्णतया मांसाहारी नहीं होते। उनका भोजन पौधों और मांस दोनों का मिश्रण होता है।

* इस के कारण कई जन्तु आज (म्दकमदहमतमक`चमबपमे) की श्रेणी में आ गये हैं। उदाहरण दें (ज्नतजसमए क्वहपिीए ठपतके मजबण)
* जन्तु केवल भोजन के लिये ही नहीं मारे जाते। चीन में सांपों के रक्त का प्रयोग टपजंसपजल – टपहवनत बढाने में किया जाता है। भारत में फालिज के इलाज में कबूतर के खून की मालिश की जाती है। एक तरह के फोड़े पर चिड़िया का पेट फाड़कर उसकी पट्टी बांधी जाती है।
* पौरूष शक्ति के लिये सिंह मांस का भोजन।

महिला स्वर– अच्छा भोजन, वह भी भर पेट, तो शरीर स्वस्थ रहेगा। पर ऐसा हमेशा नहीं होता इसके बाद भी हम बीमार हो जाते हैं । उस हालत में हमारी मदद को आती है हमारी जैव–विविधता। ऐसे में हमें चाहिये होतीं हैं दवायें। एक सर्वेक्षण में बहुतायत से इस्तेमाल होने वाली 150 दवाओं के जब आंकड़े इकट्ठे किये गये तो पता चला उनमें से 118 तो हमें प्राकृतिक स्रोतों से ही मिलतीं हैं और तीन चौथाई तो अकेले पौधों से ही मिलती है। इसके बाद नम्बर आता है फफूंद का। करीब 20 प्रतिशत दवायें, खास करके जीवाणु रोधी एन्टीबायटिक्स, हमें इन्हीं से मिलते है।

पुरूष स्वर– दुनियां की तीन चौथाई आबादी का स्वास्थय स्थानीय और पारम्परिक इलाज पर निर्भर है। इस तरह के इलाज में करीब 85 प्रतिशत दवायें हमें पौधों से मिलतीं हैं।

विशेषज्ञ से साक्षात्कार

संभावित प्रश्न–

* पौधों का आज की प्रचलित दवाओं में योगदान कितना है?
* पौधों से दवा उत्पादन में क्षेत्र में क्या सम्भावनायें हैं?

* बहुचर्चित रोगों में प्रयोग की जाने वाली व सामान्यतः प्रयोग की जाने वाली कौन सी मुख्य औषधियां हैं? वे हमें किन किन पौधों से मिलती हैं? उनका पौधों का प्रचलित नाम?

* किन किन जन्तुओं से आम उपयोग की दवायें मिलती हैं।

सम्भावित उत्तर–

* दुनिया की 80 प्रतिशत आबादी का इलाज मुख्यतः पौधों से मिलने वाली औषधियों से किया जाता है।

* पौधों से दवा उत्पादन की अपार संभावनायें है। करीब दो लाख 65 हजार प्रकार के फूल वाले पौधे पृथ्वी पर होते हैं जिनमें से मात्र एक प्रतिशत को ही दवाइयों के लिये जांचा जा सका है। वैसे ये प्रक्रिया काफी कठिन है, और लम्बी भी। पौधों में दवा हेतु इस्तेमाल किये जाने वाले पदार्थ मिलने की सम्भावना 125 में से एक के लगभग होती है। जबकि प्रयोगशाला में कृत्रिम रूप में बनाये गये पदार्थो में दवा मिलने की संभावना 10,000 में से एक ही होती है।

* 'बायोप्रोस्पेक्टिंग' व 'एथनोबॉटनी' को सहज और सरल भाषा में समझायें।

* पौधों से रोजमर्रा के उपयोग की कई दवायें निकाली जाती हैं। ;देखे चार्टद्ध और पौधों के नाम आम बोलचाल की भाषा में बतायें फिर उन बीमारियों के नाम बतायें जिनके लिये उन पौधों से दवाइयां मिलती हैं। उदाहरण के लिये–सामान्य सिरदर्द की दवा 'एस्पिरिन', 'विलो वृक्ष' की छाल से, मलेरिया बुखार की दवा 'कुनीन', 'सिनकोना' वृक्ष की छाल से, उच्च रक्तचाप की दवा 'रेसरपीन', 'सर्प–गंधा' नाम के पहाड़ी पौधे से, 'हिपेटाइटिस–बी पीलिया' की दवा, 'भूमि–आंवला' के फलों से, हृदय रोगों की अति महत्वपूर्ण दवा 'डिजोक्सिन', 'फाक्सग्लोव' नामक पौधे से, खांसी की दवा 'कोडीन' और दर्द मिटाने की अति असरदायक दवा 'मार्फीन', 'अफीम' के पौधे से, बच्चों के कैंसर लिम्फोमा में असर करने वाली दवायें 'विनक्रिस्टीन' और 'विनब्लास्टिन', सदाबहार अकौये से।

पुरूष स्वर– कितनी सारी वे दवायें हमें अब तक पौधों से मिली हैं जिन्हें दुनियां भर में प्रयोग किया जाता है। हमारे आयुर्वेद में तो बहुत सारे आसव, अवलेह, पाक आदि पूर्णतः पौधों से ही बनते हैं। नीम तो देखा है तुमने? इसे इतने रोगों में प्रयोग किया जाता था कि इसे 'सर्व रोग निवारिणी वनस्पति' मानते थे। अब तो इसके गुणों का बाकायदा पेटेंट हो चुका है। च्यवनप्राश जानते हैं न आप? इसे तो आप में से बहुतों ने खाया भी होगा। ये पूरा का पूरा पौधों से प्राप्त पदार्थो से ही बनता है। कभी–कभी दवाई की खोज के साथ बड़ी रोचक घटनायें जुड़ी रहती हैं। डिजाक्सिन भी ऐसी ही दवा है। इसको खोजने का श्रेय जाता है एक स्काट डाक्टर विलियम विदरिंग को। विदरिंग कुशल और उस समय के बहुत धनी डाक्टर थे। पर वे अपनी प्रैक्टिस से समय बचाकर आस–पास के गांवों में मरीज देखने जाया करते थे, वह भी मुत। और एक दिन विदरिंग गांव में मरीजों की भीड़ से घिरे बैठे थे।

ड्रामा

(;डाक्टर विदरिंग मरीजों के कोलाहल में घिरे बैठे हैं। इसका उपयुक्त ध्वनि प्रभाव दें। एक बुढ़िया उन्हें अपनी बीमारी के बारे में बता रही है। उसकी सांस फूल रही है)

विदरिंग– बोलेा माई क्या तकलीफ् है?

बुढ़िया– अरे क्या बतायें बेटा,सारा बदन सूज गया है, पेट भी किना बड़ा हो गया है, धड़कन होती है। अब तो सांस भी नहीं ली जाती ढंग से ; हांफने लगती है)

विदरिंग– पीछे घूमो....हां.....सांस लो गहरी.....लेट जाओ.....ठीक है.....अब उठ जाओ। देखो अम्मा तुम्हें ड्राप्सी की बीमारी है। तुम्हारे दिल ने भी कम करना कम कर दिया है। उसके चारों ओर की झिल्ली में भी पानी उतर आया है। अफसोस है माई कि मैं तुम्हारे लिये कुछ नहीं कर सकता।

बुढ़िया– तो मेरा आखिरी वक्त है ये?

विदरिंग– (गहरी सांस खींच कर) क्या कहूं ;(दुखी स्वर में) भाई भगवान को याद करो मैं तो मजबूर हूँ।

(ड्रामा समाप्त)

स्त्री स्वर – तो विदरिंग दुखी मन से उस बुढ़िया को एक तरह से मौत की पूर्व सूचना दे आये। अगली बार विदरिंग जब फिर उसी गांव से गुजरे तो वहां के निवासियों से उस बुढ़िया का हाल चाल पूछना नहीं भूले।

ड्रामा

(एक ग्रामीण और विदरिंग की बात चीत)

ग्रामीण– ऊ...ऊ....ऊ बूढ़ा? अरे कुछौ नहीं हुआ ऊके। एक दम तंदरूस्त है। आप तो कहे थे.....

विदरिंग– (स्वगत) मर जायेगी, ;प्रकट में) पर कैसे कैसे ठीक हुई, जानना पड़ेगा। उसका घर कहां है?

ग्रामीण– यहीं सामने

(ड्रामा समाप्त)

महिला स्वर– और डाक्टर विदरिंग पहुंचे बुढ़िया का हाल चाल लेने, यह जानने के लिये उसने कौन सी दवा ली?

ड्रामा

स्थान बुढ़िया का घर बुढ़िया, बुढ़िया और विदरिंग की बात चीत)

बुढ़िया– अरे जिंदगी थी बेटा सो बचा ली ऊपर वाले ने। तुमने तो मना कर दई तो गांव के हकीम से दवाई लेने लगी। वो एक काढ़ा दिये रहे उही उबाल उबाल के पिया। भगवान की माया कि दवाई का असर.. सूजन भी मिट गई, हंफनी भी नहीं होती। थोड़ा बहुत टरक भी लेती हूँ।

विदरिंग– मुझे दिखाओगी वह काढ़ा अम्मा?

बुढ़िया– बिल्कुल, जे लेओ जे टोकरी में धरो है।

विदरिंग– एक मुट्ठी ले लूं मैं?

बुढ़िया– जरूर। (ड्रामा समाप्त)

महिला स्वर– विदरिंग ने अथक प्रयास कर के पता लगा ही लिया कि बुढ़िया पर ये कमाल किया था 'फाक्सग्लोव' नाम के पौधे ने। उन्होने उसके रस से एक दवा खोज निकाली। चूंकि इस पौधे के फूल की पंखुड़ियां उंगली के आकार की होती थीं और वहां उंगली को कहा जाता था था 'डिजिट', सो इस पौधे का नाम रखा गया 'डिजिटेलिस' और दवा का नाम 'डिजिटोक्सिन'। आज ये हृदय रोगों में एक प्रचुरता से प्रयोग की जाने वाली दवा है।

पुरूष स्वर– पौधे ही क्यों दवाइयां हमें तो हमें जन्तुओं से भी मिलती है।

विशेषज्ञ का साक्षात्कार

सम्भावित प्रश्न–

आज कल की प्रचलित दवाओं में से कोन सी और कितनी ऐसी है जो हमें जन्तुओं से मिलती हैं?

सम्भावित उत्तर–

* चार्ट देखें– जोंक से 'हिरूडिन' नामक पदार्थ जो खून को जमने से रोकने (Anticoagulant) का काम करता है, कैंसर रोधी गुणों वाला पदार्थ Tunicata नामक समुद्री मछली से, एक्वाडोर के जहरीले Dendrobatid मेढ़क के जहर से दर्द निवारक दवा ए.बी.टी. 594, जिस पर अनुसंधान चल रहा है। ये दर्द दूर करने में अब तक की शक्तिशाली दवा मार्फीन से भी 100 गुना ज्यादा असरदार है। ब्वदम`दंपस ज्वगपदे से मिलने वाली दवायें यथा– पेरिआल्ट नामक शक्तिशाली दर्द निवारक जिसकी आदत भी नहीं पड़ती, मिर्गी और फेफड़ों के कैंसर में काम आ सकने वाली सम्भावित दवायें।

* New drugs under investigation&देखें चार्ट

स्त्री स्वर– जन्तुओं से हमें दवाइयां तो मिलती ही हैं पर इसके अलावा भी ये हमारी मदद करते हैं, दवाओं के विकास में, बीमारियों को समझने में और मानव पर दवाओं के गुण निर्धारण में।

विशेषज्ञ का साक्षात्कार

संभावित प्रश्न–

* What are animal models?
* Few examples?
* How they help in understanding diseases?
* How drugs are tested over them?
* How a new drug develops?

संभावित उत्तर–

* Animal Models- बीमारी समझने के लिये यथा–डेनिंग बीयर, डॉगफिश शार्क, पिट वायपर
* Animal model for therapeutics - Polymerase chain reaction, जिसमें डी.एन.ए रीजेनेरेशन से बीमारी की सूक्ष्मतम उपस्थिति का पता कर लिया जाता है। इसके लिये आवश्यक एन्जाइम गर्म पानी के स्रोतों springs of Yellowstone national park में रहने वाले जीवाणुओं से प्राप्त किये गये हैं।
* दवा सुरक्षित है कि नहीं ये जानने के लिये ंदपउंस उवकमसे का प्रयोग, जिसमें जानवर तरह तरह की यातनायें सहते हैं। जीवन भर के लिये अपंग, अंधे या बहरे हो जाते हैं।

स्त्री स्वर– कितना सहते हैं ये जन्तु हमारे लिये। हमने कभी कुछ किया उनके लिये? येलोस्टोन नेशनल पार्क के गर्म स्रोतो में रहने वाले जीवाणुओं ने रोग पहचानने का एक नया तरीका दिया हमें, दुनियां को एक नया उद्योग दिया, पर हमने क्या दिया उन्हें? उनका विनाश– वे समाप्त हो रहे हैं, दुनियां से।

पुरूष स्वर– हर वर्ष हम करीब सात लाख किस्म के करोड़ों मीट्रिक टन जहरीले और हानिकारक पदार्थ अपने वातावरण में छोड़ते हैं। जरा सोचिये ये पदार्थ वातावरण में, हवा में, हमारे पानी में घुलते रहें तो क्या होगा हमारा? पूरी मानव सभ्यता समाप्त हो जायेगी। इन सबसे निपट कर हमारे वातावरण को जीने लायक कोन बनाता है? यही हमारे आस–पास रहने वाले पेड़ पौधे, जीव जन्तु बैक्टीरिया और फफूंद। हमारा क्या कोई फर्ज नहीं बनता उनके प्रति?

स्त्री स्वर– कुदरत की लाठी में आवाज नहीं होती पर पड़ती वह ठिकाने पर है। किसी का भी गुनाह माफ नहीं किया जाता कुदरत में, हमारा भी नहीं। नहीं समझे? ये रोज–रोज उभरतीं नई–नई बीमारियां, तरह–तरह के रोगाणु, एड्स, सार्स, प्राकृतिक आपदायें, दैवी प्रकोप पुरानी बीमारियों के विकराल रूप, क्या हैं? (जोर देकर) जी कुदरत की तरफ से सजा है इंसान को, कुदरत की जैव–विविधता पर किये गये उसके गुनाहों की।

Epidemiologist ls interview

संभावित प्रश्न–

* ये नई–नई बीमारियां जो दुनिया के पटल पर उभर रही हैं, उनका कारण?
* नये–नये रोगाणु क्यों पता लग रहें हैं हर साल?
* जो बीमारियां कभी लगतीं थी कि दुनिया के पटल से मिट गई हैं, अब वापस क्यों लौटने लगीं है?
* Epidemic of epidemiċ की अवधारणा क्या है?

संभावित उत्तर–

* नये रोगों के पैदा होने की प्रक्रिया– देखें बैकग्राउन्डर। ये सब सूक्ष्म, सरल सहज प्रकार से समझाया जायेगा।
* मलेशिया में वर्षा वनों को जलायें जाने का और उससे उत्पन्न होने वाली निपा वायरस की बीमारी फैलने का उदाहरण दें –देखें बैकग्राउन्डर।
* मलेरिया का बढ़ता प्रकोप व फैल्सीपैरम मलेरिया का अफ्रीका में प्रसार।
* डी0डी0टी0 के प्रति मच्छरों में Resistance.

पुरूष स्वर – मुसीबतें हमारी प्रतीक्षा में हैं। हमें अभी संभल जाना होगा। नहीं तो नष्ट हो जायेगें हम। ये कल्पित भय नहीं है, हकीकत है।

स्त्री स्वर– हमें अगर रहना है तो हमें अपने आस–पास की जैव विविधता को बनाये रखना होगा।

पुरूष स्वर– हमारा अस्तित्व जैव–विविधता पर ही निर्भर है, ये बात गांठ बांध लेनी होगी।

स्त्री स्वर– जैव–विविधता हमारे पास हमारे पूर्वजों की धरोहर है।

पुरूष स्वर – जिसे हमें अपनी अगली पीढ़ी को सौंपना है, बिना उसे नुकसान पहुंचाये।

स्त्री पुरूष– (समवेत स्वर) यही आज का संकल्प है और कल का विश्वास भी।

(संगीत बजता है)

सूत्राधार– दोस्तो आपने जाना कैसे जरूरी है जैव–विविधता हमारे लिये, हमारी आगे आने वाली पीढ़ी के लिये। हमारी गलती ने कितना नुकसान पहुॅचाया है इस जैव–विविधता को। पौधों और जन्तुओं की कितनी ही किस्में पृथ्वी से हमेशा–हमेशा के लिये मिट गईं, कितनी मिटने वाली हैं। इसका खामियाजा भुगत रहें हैं हम आज, नई–नई बीमारियों के रूप में, पुरानी बीमारियों के विकराल रूप में। वे पौधे, वे जन्तु, जो हमारे पर्यावरण को जीने लायक बना रहें हैं, जिनसे हमारे रोगों के लिये हमें दवायें मिलती हैं हमें उनका महत्व आंकना पड़ेगा।

आज यहीं तक। अगली बार बात करेंगे तीखी, चटपटी, सोंधी यानि कि मसालों की तिब्बती हिकमत की और आयुर्वेद की। तब तक के लिये तुम्हें तुम्हारा स्वास्थ्य मुबारक, तुम्हारे आस पास की रंगीनं जैव–विविधता मुबारक, नमस्कार।

– डा0 अरविन्द दुबे

!